सरयू रामायण में काव्यत्व

डॉ अंटोनी ओलिवर
असोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
संत जोसफ वाणिज्य महाविद्यालय, बंगलूरू
मो – 8197166038
ईमेल - antonyoliver.oliver840@gmail.com

भूमिका :

डॉ. सरयू कृष्णमूर्ति 'सरयूराम' दक्षिण भारत के विशेषकर कर्नाटक के कभी पुंगव रहे हैं। तेलुगू भाषा भाषी होने के उपरांत भी अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी, कन्नड़, प्राकृत, अपभ्रंश, ब्रज, अवधि आदि भाषाओं पर विशेष अधिकार रखते थे इन्होंने हिंदी में काव्य रचना कर अपनी असाध्य साहित्य कौशलता व शब्द चातुरी को प्रतिपादित की है। काव्य में कवि का स्वानुभव, चिंतन मनन, अभिव्यक्ति, अभिव्यंजना तथा भाव प्रवणता का परिचय मिलता ही है साथ में उनकी भाषा-घनिष्ठता व शब्द संपदा शक्ति का भी बोध होने लगता है ऐसे महद् कवि की महत्तीय रचना सरयू रामायण रही जो महाकाव्यत्व के सभी गुणों से मंडित एक मेरू रचना है।

सरयू रामायण में काव्यत्व :

सरयू रामायण में काफी तत्वों का सन्निवेश विविध रूप में प्राप्त होता है काव्योद्देश्य की व्याख्या, काव्यतत्वों का सफल प्रयोग व भाव का संतुलित परीक्षण उनकी रचनाओं को सुकीर्ति प्रदान करते हैं। अलंकार, छंद, रस, शब्द-शक्ति आदि का अनुष्ठानात्मक प्रयोग काव्य में चार चाँद लगा देते हैं। उत्कृष्ट कोटि का काव्य पंडित झलकने पर भी कहीं भी काव्याचार्यत्व नहीं प्रदर्शित हुआ है और इसी उद्देश्य के कारण कवि अपने आचार्यत्व कम भक्ति अधिक प्रकट करने की चेष्टा की है।

प्रत्येक घटक में भूमिका बांधने के पश्चात वैज्ञानिक ढंग से उस घटक में शुभकामना हेतु मंगलाचरण तत्पश्चात कथा गायन, कथा की महिमा, छंदबद्ध अंशों की आवली, शुभकामना और अंत में फल श्रुति के साथ इतिश्री होता है।

कुल 32 भागों में प्रकाशित खंडों का विवरण निम्नवत हैं -

1. सरयू राम, 2. दशरथ राम, 3. कौशिक राम, 4. अहल्या राम, 5. मल्लिका राम, 6. मैथिली राम, 7. कैकेयी राम, 8. कौशल्या राम, 9. अयोध्या राम, 10. केवट राम, 11. वाल्मीकि राम, 12. भरत श्रीराम, 13. कानन राम, 14. पंचवटी राम, 15. जटायु राम, 16. शबरी राम, 17. राम-शबरी 18. श्री हनुमाद, 19. बलिराम, 20. सुग्रीव राम, 21. सुंदर राम 22. सौंदर्य श्रीराम, 23. विभीषण राम, 24. सेतु श्री राम, 25. रण श्री राम, 26. संजीव श्रीराम, 27. पाताल राम, 28. इंद्रजीत राम, 29. जय श्री राम 30. अनिल श्रीराम, 31. किसकिन्दा राम, 32. अनंत राम।

इन 32 घटिकाओं में पूर्णतः रामायण का विवरण व प्रमुख प्रसंगों पर प्रकाश डाला हुआ है। महाकाव्य के शास्त्रीय लक्षणों के साथ धर्म, दर्शन, कवित्व का सामंजस्य स्थापित किया गया है। घटनाक्रम व इतिवृत्त में दार्शनिक व धार्मिक प्रसंग ऐसे मिल गए हैं कि लगता है मणिकंचन का समागम हुआ हो।

दोहे छंद में फलश्रुति की कामना इस प्रकार है-

कथा अहल्या राम की, मानस-सागर हेतु
गंगा हैं यह सर्वजन, पाते पवित्र सुकेतु।

प्रार्थना के रूप में कथा गायन इस प्रकार हुआ है

प्रभु गाथा, गायक हनुमान
हनुमान धनुर्धर में कमान
रात का चरित्र सागर महान
यह तरे कौन चढ़ बुद्धिमान।

चौपाई छंद में प्रणीत इस प्रार्थना में प्रत्येक चरणों में 16 मात्राएँ प्रयुक्त है और जगण व तरण से वंचित हैं।

नूतन विचार

कई प्रसंग नव नूतन हैं जो रामचरित मानस अथवा रामायण में उपलब्ध नहीं होते हैं यथा एक दृष्टव्य निम्न प्रसंग की ओर है।

नवविवाहित दंपति राम-सीता का प्रणय, रात देर से महल कक्ष में प्रवेश होने पर सीता का रूट कर पूछना "क्या आप मुझे विस्मृत

कर गए?" तो पति राम का उत्तर हम तो एक प्राण है तो विस्मृति कैसी? तुमने मैं, मुझमें तुम, तुलसी में तुम, बाप में तुम। तुम ही तुम तो विस्मरण कैसा?
सद्य परिणयित दम्पत्ति के बीच हो रहे हैं विनोदपूर्ण उपरिवात संवाद भारतीय जीवन की उत्तम बानगी प्रदत्त है।
अलंकार : श्लेष, उपमा, अनुप्रास, अतिशयोक्ति का बाहुल्य प्रयोग इस काव्य की विशेषता है।

भक्ति रक्ति अनुरक्ति भाव

सरगु कृष्णमूर्ति सरयूराम प्रथम कोटि के कवि थे। कवि के सूक्ष्म दृष्टिकोण, व्यापक भावपक्ष, युग का सांगोपांग विवरण, भाषा शैली में अनूठेपन, आर्थिक प्रसंगों का चयन, काव्यांगों का उचित समीकरण आदि से सरयू रामायण अपने में सफल भाव राशि बन जाता है। यत्र तत्र सर्वत्र गुणगान गाते हुए अपनी हनुमद् भक्ति का प्रतिपादन किया है, निसंदेह सरगु कृष्णमूर्ति श्रेष्ठ हनुमद् भक्त थे।

हनुमान सुनाता मोदभरित
प्रभु पूण्य-सरोजा रामचरित
सुन रही अंजना चिन्मय हो
गति सुवर्चला तन्मय हो।

निष्कर्षतः यह ज्ञातव्य है कि सरयू रामायण का महाकाव्यत्व कविवर के लोकानुभव व गहन स्वाध्याय का ही नहीं अपितु सतत् साधना एवं दिव्य आत्मा संसिद्धि की परिपक्व विचारभूमि पर प्रतिष्ठित है। प्रस्तुत सरयू रामायण तुलसी के रामचरित मानस व वाल्मीकि के रामायण से अभिन्न होते हुए भी भिन्न। कई पक्षों में रामायण कवि नरेश की वैयक्तिक प्रेरणा का साक्षी है। भारतीय संस्कृति के अनुकरणीय का आदर्श रूप है। राम के सौंदर्य, शील, शक्ति, सम्मान आदि सभी का गुणगान ही इस मेंरुकृति की श्री उपलब्धि है।

जय भारत जय भारती
जय हिंद जय हिंदी

संदर्भ ग्रंथ

1. सरयू रामायण (खंड 2 से 32 तक)
2. भारतीय काव्यशास्त्र परंपरा प्रवृत्ति - प्रो. मंजुला राणा